IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 5.731

Volume 12, Issue 1, December 2021

हनुमानगढ़ तहसील में ईंट भट्टे तथा उनका विकास

(Brick Kilns and Their Development In Hanumangarh Tehsil)

Dr. Dinesh Kumar

Assistant Professor, Department of Geography

Faculty of Arts, Crafts & Social Sciences, Tantia University, Sri Ganganagar, Rajasthan

dinesh7jakhar@gmail.com

Abstract: प्रारम्भ में मानव जंगल में रहता था। धीरे-धीरे सोच विकसित होने पर उसने झोंपड़ी में रहना, बाद में लकड़ी के स्थान पर मिट्टी व पत्थरों के मकान बनाने शुरू कर दिए। जैसे-जैसे समय बीतने लगा जनसंख्या वृद्धि से गांवों शहरों में विकास के साथ मनुष्य ने पक्की ईंटों से मकान बनाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे मानव ने व्यवसाय करना आरम्भ कर दिया, जिन्हें तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है। प्राथमिक वर्ग के व्यवसाय जिनमें आखेट, मत्स्य पालन, वन व्यवसाय, पशुचारण, कृषि आदि प्रकृति से अधिक समीपता रखते है। द्वितीय वर्ग में खनन एवं विनिर्माण तथा तृतीय प्रकार के व्यवसायों में सेवाएँ सम्मिलित की गई है और यातायात व व्यापार भी आते है। प्राथमिक व्यवसायों पर प्राकृतिक परिस्थितियों का प्रभाव अधिक व द्वितीय व तृतीय पर मानवीय परिस्थितियों का प्रभाव अधिक होता है। यह शोध मुख्य रूप से औद्योगिक भूगोल से सम्बंधित है, जो भूगोल की एक प्रमुख शाखा हैं । इसमें मुख्य रूप से ईंट भट्टों पर शोध किया गया है । जिसमें हनुमानगढ़ तहसील क्षेत्र में ईंट भट्टों पर अध्ययन कर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में विस्तृत प्रश्नावाली द्वारा प्राथमिक व विभिन्न सरकारी विभागों से द्वितीयक आंकड़े लिए गये हैं। जिनके आधार पर ईंट भट्टों के विकास को दर्शाया है। साथ ही इस विषय पर स्थानीय लोगों के विचार भी प्रस्तुत किये हैं।.

Keywords: हनुमानगढ़ तहसील में ईंट भट्टे, भट्टा निर्माण के लिए आवश्यक दशाएं, भट्टा निर्माण के लिए विभागों से मान्यताएं, हनुमानगढ़ तहसील में ईंट भट्टों के विकसित होने के कारण।

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

प्राचीन काल में मानव का विकास कम हुआ उसका पर्यावरण से सम्बंध अच्छा था। पर्यावरण शुद्ध रहता था। उस समय मानव बिना घर के इधर-उधर घूम फिर कर कन्द-मूल या मांस आदि खाकर जीवन व्याप्न करता था । धीरे-धीरे विकास होने से वर्तमान समय में मानव ने पक्की ईंटो से बने घरों में रहना शुरू कर दिया है। वर्तमान में अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण ईंटों की मांग बढ़ी है क्योंकि भवनों का निर्माण तेज गति से हो रहा है। अतः इसने ईंट भट्टों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज बड़े पैमाने पर ईंट भट्टों का निर्माण हो रहा है, ताकि ईंटो की मांग को पूरा किया जा सके। वर्तमान समय औद्योगिक विकास अंत्यत तेज गति से हो रहा है। जिसका उदाहरण ईंट उद्योग भी है । जनसंख्या वृद्धि व आर्थिक स्तर अच्छा होने से ईंटों की मांग व कीमत में वृद्धि हुई है अतः ईंट भट्टा स्थापित करके लाभ कमाया जा रहा है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Impact Factor: 5.731
Volume 12, Issue 1, December 2021

II. अध्ययन क्षेत्र

हनुमानगढ़ राजस्थान प्रान्त का एक शहर है। यह उत्तर राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। हनुमानगढ़ तहसील हनुमानगढ़ जिले के अंतगर्त आती है। हनुमानगढ़ का जब जिले के रूप में 12 जुलाई 1994 को गंगानगर से विभाजन हुआ तभी से हनुमानगढ़ तहसील का उद्द्भव हुआ है। तहसील क्षेत्र घग्घर नदी के दोनों तट पर स्थित है। यह क्षेत्र हनुमानगढ़ जिले में 29°58' उत्तरी अंक्षाश व 74°32' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।

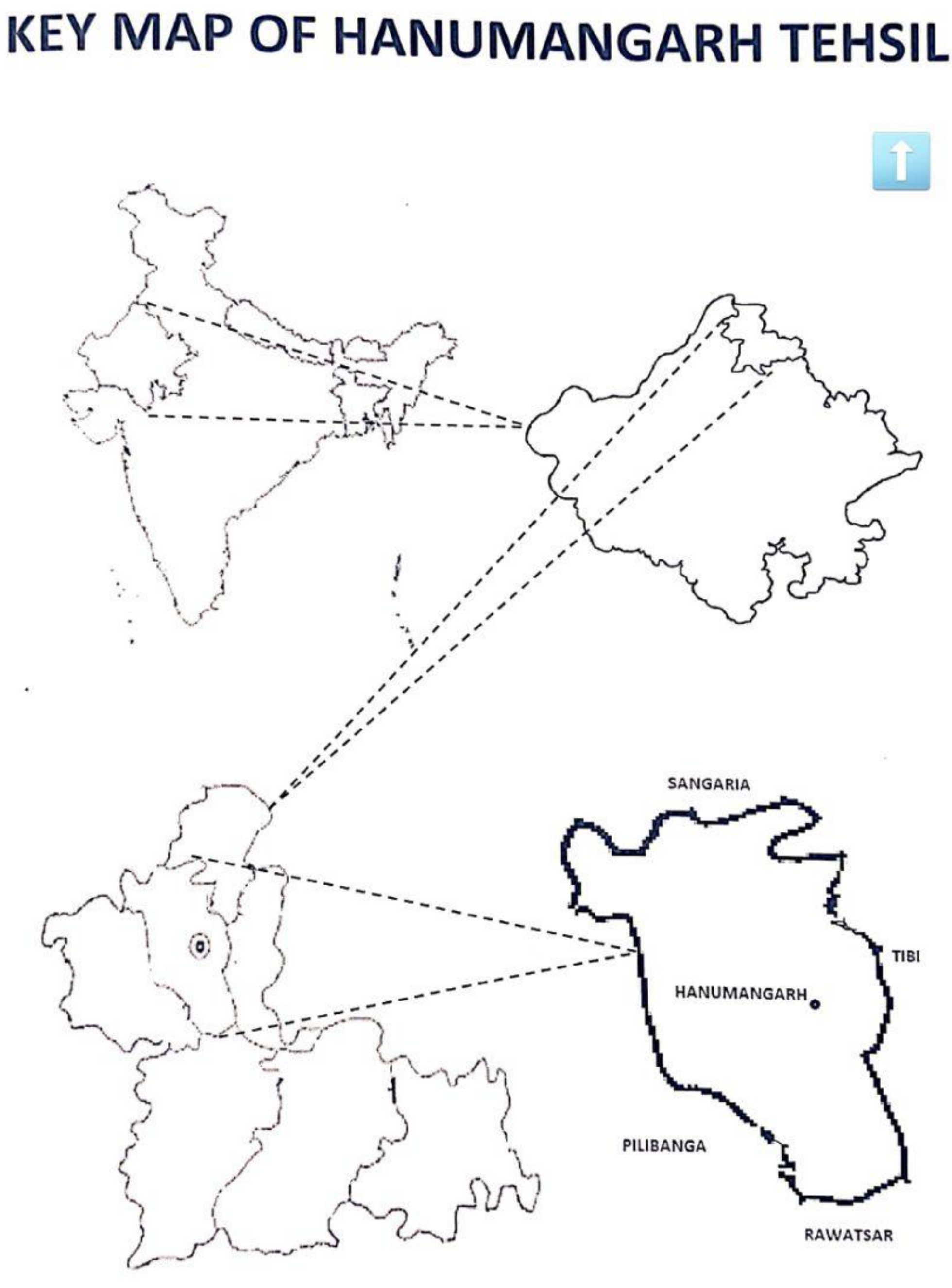

तहसील क्षेत्र जिले का महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र है। इसका क्षेत्रफल 1232.26 वर्ग कि.मी. है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रफल 1218.84 वर्ग कि.मी. तथा नगरीय क्षेत्रफल 13.42 वर्ग कि.मी. है। तहसील क्षेत्र में दो मुख्य नगर हनुमानगढ़ टाउन व हनुमानगढ़ जंक्शन स्थित है। क्षेत्र में कुल 404 गाँव हैं जिसमें से 381 आबाद गाँव तथा 23 गैर आबाद गांव है। क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 901 व्यक्ति प्रति कि.मी. है ।

III. अध्ययन के उद्देश्य

1. ईंट भट्टों का मानव जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना ।
2. मालिकों की स्थिति का अध्ययन करना ।
3. अध्ययन क्षेत्र में ईंट भट्टों के विस्तार के कारणों का अध्ययन करना।
4. ईंट भट्टों का मृदा की गुणवता का अध्ययन करना ।

IV. अध्ययन का महत्व

किसी क्षेत्र पर किए जाने वाले शोध अध्ययनों का महत्व मात्र अध्ययनात्मक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक भी है किये गए शोध अध्ययन से क्षेत्र के अस्तित्व एवं विकास के लिए उत्तरदायी कारकों कि पहचान में सहायता मिलती है। शोध अध्ययन द्वारा क्षेत्र में होने वाले विभिन्न कार्य तथा कार्यक्षेत्रों का विभाजन कर सकते हैं । तहसील या किसी क्षेत्र आदि पर किए जाने वाले अध्ययनों से उस प्रदेश के विकास में आने वाली प्रमुख समस्याओं का अध्ययन करके समस्याओं से अवगत कराया जा सकता है, ताकि इन समस्याओं को दूर करके प्रदेश क्षेत्र या तहसील का विकास किया जा सके। किसी क्षेत्र पर किया जाने वाला शोध अध्ययन उस प्रदेश के विकास की आधारशीलता होता है। हम यह कह सकते है की प्रदेश के विकास में किए गए शोध अध्ययन का अत्यधिक महत्व है।

V. विधि तन्त्र

शोध प्रबंध की विधि तन्त्र तथा कार्य प्रणाली को विभिन्न भौगोलिक अध्ययन, आर्थिक अध्ययन, सामाजिक तथा ग्रामीण व नगरीय विशेषताओं का अध्ययन प्रश्नावली एवं व्यक्तिगत अवलोकन के माध्यम से किया गया है । इस प्रकार यह कई चरणों में पूर्ण हुआ है । प्रकाशित साहित्य-राजस्थान का भूगोल, भारत का वृहद भूगोल, अधिवास भूगोल, औद्योगिक भूगोल, आर्थिक भूगोल, संसाधन भूगोल, पारिस्थितिकी व पर्यावरण भूगोल, मासिक पत्रिकाएँ तथा स्मारिकाएँ आदि का संकलन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में विस्तृत प्रश्नावाली द्वारा प्राथमिक व विभिन्न सरकारी विभागों से द्वितीयक आंकड़े लिए गये हैं।

VI. हनुमानगढ़ तहसील में ईंट भट्टे तथा उनका विकास

6.1 हनुमानगढ़ तहसील में ईंट भट्टे

आज के युग में मानव अपना विकास अत्यन्त तीव्र गति से कर रहा है। मानव ने निवास स्थान, ऑफिस तथा अन्य भवनों के निर्माण में ईंटो का प्रयोग आम बात है। ईंटों के निर्माण की प्रक्रिया सिंधु घाटी सभ्यता में भी रही है। हनुमानगढ़ में इसके अवशेष कालीबंगा से प्राप्त हुए है। तहसील क्षेत्र में स्थित भटनेर दुर्ग भी प्राचीन काल में ईंटों द्वारा निर्मित है। इससे पता चलता है कि यहाँ स्वंत्रता से पूर्व भी ईट उद्योग विकसित था । परन्तु वर्तमान समय में यह उद्योग अत्यंत तेजी से बढ़ा। आज यह उद्योग

विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित हो रहा है। हनुमानगढ़ जिले में दिसम्बर, 2015 तक कुल 432 ईंट भट्टे रजिस्टर्ड है। जिसमे से 339 चालू है तथा 98 बंद है। इनमें से हनुमानगढ़ तहसील में 97 भट्टों से ईंट उत्पादन हो रहा है। 26 भट्टों में उत्पादन बंद है अर्थात् कुल 123 ईंट भट्टे है। भट्टा निर्माण के लिए आवश्यक दशाएं :

1. **पर्याप्त पूंजी-** ईंट भट्टा उद्योग स्थापित करने के लिए पूंजी की अत्यधिक मात्रा की जरूरत होती है । भट्टे को लगाने के लिए कम से कम 50 लाख रूपए की जरूरत पड़ती है, तथा इसे चलाने के लिए 1 करोड़ रूपए की पूंजी की आवश्यकता होती है। पर्याप्त पूंजी के आभाव में ईंट भट्टा उद्योग का विकास संभव नहीं है।
2. **पर्याप्त भूमि-** कोई भी उद्योग स्थापित करने के लिए भूमि प्रमुख आवश्यकता है । भट्टा निर्माण के लिए यह सर्वप्रथम आवश्यकता है । कोई भी व्यक्ति जो यह उद्योग स्थापित करता है उसके पास कम से कम 20-25 बीघा जमीन होनी आवश्यक है। क्योंकि भट्टा स्थापित करने के लिए अत्यधिक क्षेत्र की आवश्यकता पड़ती है।
3. **अच्छी मिट्टी की उपलब्धता-** ईंट निर्माण में सर्वाधिक आवश्यकता मिट्टी की होती है। ईंटो के लिए लाल मिट्टी सर्वाधिक उपयोगी है। क्योंकि यह पानी मिलाने पर आसानी से भीग जाती है। इससे बनी ईंटों में सफाई अधिक तथा क्वालिटी में भी अच्छी होती है। इसके अतिरिक्त काली तथा दोमट मिट्टी भी ईंट निर्माण के लिए उपयुक्त मानी जाती है अतः यह उद्योग इन्ही मिट्टी क्षेत्र में स्थापित किया जाता है ।
4. **ईंधन की उपलब्धता-** ईंटो को अत्यधिक ताप पर तैयार किया जाता है। जिसके लिए अत्यधिक ईंधन की आवश्यकता होती है। ईंधन के रूप में मुख्यतः कोयला, सरसों का तुड़ा, ग्वार का नीरा, तथा लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। कोयला दुसरे राज्यों से मंगवाना पड़ता है जो की कठिन कार्य तथा महंगा होता है। इसके स्थान पर अन्य ईंधन लकड़ी, सरसों का तुड़ा व ग्वार का नीरा ज्यादा प्रयोग होता है । अतः उद्योग इन ईंधनों की ज्यादा उपलब्धता वाले क्षेत्रों में स्थापित किया जाता है ।
5. **पानी की उपलब्धता-** पानी ईंट उद्योग के लिए अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इसका उपयोग पीने के लिए तथा ईंटों के लिए गारा बनाने में होता है। इसके लिए नहरी पानी उपयोग होता है। अतः ईट उद्योग पानी स्त्रोत के क्षेत्र में स्थापित किया जाता है। क्योंकि या किराये के द्वारा पानी मंगवाना बहुत महंगा पड़ता है।
6. **श्रमिकों की अधिकता-** किसी भी उद्योग को चलाने के लिए उसमें कार्य करने हेतु मजदूरों की आवश्यकता होती है। जैसे पथेर श्रमिक निकासी श्रमिक, भराई श्रमिक, ड्राइवर आदि। ये श्रमिक कुशल भी होने चाहिए ताकि अपना कार्य अच्छी तरह कर सके। अगर श्रमिक अकुशल होंगे तो ईंटों की प्रकृति भी खराब होगी । अतः जिस क्षेत्र में श्रमिक ज्यादा होंगे वहाँ यह उद्योग स्थापित होगा क्योंकि यदि उद्योग के क्षेत्र में श्रमिक कम हो तो इन्हें बाहर से लाना पड़ता है जो की अत्यन्त महंगे पड़ते हैं।
7. **परिवहन सुविधा-** ईंट भट्टा निर्माण से पूर्व यह देखना जरूरी है कि जिस क्षेत्र में भट्टा स्थापित किया जा रहा है उस क्षेत्र में सड़क मार्ग मांग क्षेत्र में ईंट पहुंचाने के लिए परिवहन अत्यंत आवश्यक है ।
8. **आबादी क्षेत्र से दूर-** ईंट भट्टा आबादी क्षेत्र से दूर स्थापित किया जाना चाहिए क्योंकि इससे उत्पन्न प्रदुषण से मानव जीवन पर विपरित व हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं ।
9. **मांग की अधिकता-** यह इस उद्योग के लिए महत्वपूर्ण दशा है। क्योंकि जहां मांग ज्यादा होगी वहां यह उद्योग ज्यादा विकसित होगा ।।

10. **सरकारी प्रोत्साहन-** यदि सरकार किसी उद्योग को प्रोत्साहन देती है तो उस उद्योग के विकास में हायता मिलती है। क्योंकि भट्टा उद्योग पर विभिन्न प्रकार के कर सरकार द्वारा लगाये जाते है। अत सरकार द्वारा प्रोत्साहन राशि देकर इन करी का भार भट्टा मालिकों पर कम किया जा सकता है।

6.2 भट्टा निर्माण के लिए विभागों से मान्यताएं

भट्टा निर्माण के लिए सरकार द्वारा विभिन्न नियम तथा शर्ते निर्धारित होते है। जिनका पालन करना अनिवार्य है। इसके निर्माण के लिए विभिन्न सरकारी विभागों से अनुमति लेनी पड़ती है, अर्थात भट्टा निर्माण से पहले विभिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं को पूरा करना पड़ता है। जिनमें से मुख्य केन्द्र/क्षेत्र/विभाग है- खनन विभाग, हनुमानगढ़, रजिस्ट्रेशन जिला उद्योग केंद्र, नगरपालिका या ग्राम पंचायत से एन.ओ.सी. प्राप्त करना। कारखाना व वायलस कार्यालय, प्रदुषण विभाग, बीकानेर, जमीन कृषिगत से अकृषिगत करवाना आदि।

6.3 हनुमानगढ़ तहसील में ईंट भट्टों के विकसित होने के कारण

क्षेत्र में वर्तमान समय अत्यधिक भट्टे स्थापित है जो जिले में सर्वाधिक है। इसके मुख्य कारण निम्न है-

1. **घग्घर नदी-** हनुमानगढ़ घर नदी के तट पर स्थित है तथा घग्घर नदी जिले से गुजरती है। क्षेत्र में सर्वाधिक ईंट हे घग्घर नदी (नाली) क्षेत्र में स्थित है क्योंकि नाली की मिट्टी का उपयोग ईंटों के निर्माण में होता है साथ ही साथ पानी भी उपलब्ध हो जाता है। ईटो की प्रकृति भी उच्च गुणवता की होती है।
2. **उपयुक्त मिट्टी-** ईंट भट्टों के लिए कच्चा माल मिट्टी होती है। हनुमानगढ़ क्षेत्र उपजाऊ क्षेत्र है। यहाँ लाल, दोगट, काली चिकनाई युक्त मिलावटी मिट्टी पाई जाती हैं। ये मिट्टियाँ ईंट बनाने में सर्वाधिक उपयोगी मानी जाती है। ये मिट्टियाँ यहाँ विस्तृत क्षेत्रों में पाई जाती है। अतः यहाँ अधिक ईंट भट्टे विकसित हुए है
3. पर्याप्त पूंजी निवेश-हनुमानगढ़ क्षेत्र सम्पन्न क्षेत्र है। यहाँ लोगों का जीवन उच्च स्तर का है तथा यहाँ अनेक व्यापारी है जिनके पास पर्याप्त मात्रा में पूंजी है। अतः ये ईंट भट्टों में अत्यधिक पूंजी निवेश कर सकते है। यही कारण है की यहाँ यह उद्योग ज्यादा विकसित हुआ है ।
4. **मांग अधिक-**हनुमानगढ क्षेत्र में सम्पन्न लोग निवास करते हैं। यह क्षेत्र विकसित प्रदेश है। अत: लोगों के घर, भवन, दफ्तर, सरकारी इमारते, स्कूल, कॉलेज, औद्योगिक इकाईया आदि पक्की ईंटों से निर्मित है। इस कारण क्षेत्र में ईंटों की मांग अत्यधिक है। साथ ही साथ लोगों का रहन सहन का स्तर भी ऊँचा हो गया है।
5. **ईंधन की उपलब्धता-**ईंटों को पकाने में ईंधन का महत्वपूर्ण योगदान है। क्षेत्र में कृषि फसलों से ईमन की प्राप्ति सर्वाधिक मात्रा में होती है। कभी होने पर कोयला मंगवा लिया जाता है अतः यहाँ भट्टे अधिक विकसित हुए है।
6. **परिवहन के अच्छे साधन-**परिवहन का प्रभावों पर पड़ता है। तहसील क्षेत्र में महे परिवहन भाग से जुड़े है या इन्ही पर स्थित है। ताकि माग वाले क्षेत्र में ईंटो को पहुंचाया जा सके। हनुमानगढ़ में चारों तरफ सड़कों का जाल है अतः यहाँ उद्योग ज्यादा विकसित हुआ है ।
7. **जल की उपलब्धता-**हनुमानगढ़ क्षेत्र में घग्घर नदी, भाखड़ा नहर, इंदिरा गाँधी नहर, मुख्य रूप से बहती है तथा इन्हीं का जल यहाँ सिंचाई व अन्य उपयोग में आता है। ईंट भट्टो में नहरों का पानी सर्वाधिक उपयोग आता है तथा कभी-कभी

ट्यूबवेल का उपयोग भी होता है। दोनों ही साधन यहाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है ।

8. **सस्ते श्रमिक-**हनुमानगढ़ क्षेत्र में अत्यधिक जनसंख्या निवास करती है। जिसके कार यहाँ बेरोजगारी की समस्या है। शिक्षा की भी कमी है अतः अशिक्षित व बेरोजगार लोग रोजगार कि तलाश में ईंट भट्टों पर कार्य करने लगतें है । ग्रामीण क्षेत्र से सस्ते श्रमिक मिल जाते है ।
9. **सरकारी प्रोत्साहन-**कभी-कभी सरकार भी ईंट उद्योग को प्रोत्साहन देती है। इन्हें कर माफ भी कर देती है। जिसके कारण मालिकों पर आर्थिक बोझ कम होता है । तथा यह उद्योग तेज गति से विकसित होता है । उपयुक्त कारण हनुमानगढ़ तहसील क्षेत्र में ईंट भट्टों में विकसित होने के मुख्य कारण है।

VII. निष्कर्ष

वर्तमान में अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण ईंटों की मांग बढ़ी है, क्योंकि भवनों का निर्माण तेज गति से हो रहा है। अतः इसने ईंट भट्टों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज बड़े पैमाने पर ईंट भट्टों का निर्माण हो रहा है, ताकि ईंटो की मांग को पूरा किया जा सके। लेकिन इस अनियन्त्रित औद्योगिक वृद्धि ने पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डाला है। आज ईंट भट्टों के कारण हो रहे उत्खनन से मृदा अवक्रमण को बढ़ावा मिल रहा है। ईंट भट्टों से पर्यावरण प्रदूषण को भी बढ़ावा मिल रहा है। इस विकास के प्राकतिक संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभावों का समय समय पर अध्ययन किया जाना आवश्यक है। ईंट भट्टो के इन संसाधनों पर पड़ने वाले गुणात्मक प्रभावों को हम सामान्य अध्ययन से जान लेते है, लेकिन इनके मात्रात्मक प्रभावों को जानना भी भविष्य में आवश्यक है।

REFERENCES

[1]. Jat, B.C. (2011). Economic Geography, Panchsheel Publications, Jaipur, pp.416.
[2]. Nusrat, A and Mahadev P. D, (1991). Environmental Impact of Brick Loam Quarrying on Agricultural Soil. The Inian Geographical Journal, December, pp. 83-88.
[3]. B.M. Skinder, A.K. Pandit, A.Q. Sheikh and B.A. Ganai (2014). "Brick kilns: cause of atmospheric pollution", Pollution effects and control, 2(2), Article 112.
[4]. M. Ismail, D. Muhammad, F.U. Khan et al, (2012). “ Effects of brick kilns emission on heavy metal content of contiguous soil and plants," Sarhad Journal of Agricultural, vol. 28. No. 3, pp. 403- 409.
[5]. Nyati, K.P. (1992). Brick Industry, Environmental Problems Issues and Prospects, Brick and Tile News, New Delhi.
[6]. Sharma, Raj Kumar (2005). Economic Geography, Himanshu Publication, Udayapur.
[7]. Singh, A. L. and Asgher, Md. S. (2005). Impact of brick kilns on land use/landcover changes around Aligarh city, India. J. Habitat Int., 29, pp.591-602.
[8]. Asgher, Md. S.(2004). Land Degradation and Environmental Pollution: Impact of Brick Kilns, B. R. Publishing Corporation, Delhi.
[9]. Central Pollution Control Board (1996). Comprehensive Industry Document with Standards/Guidelines for Pollution Control in Brick-kilns, Series: COINDS/16//1995-96. Delhi.
[10]. Hajela. R.B. (1994). Brick Industry-A Perspective, Brick and Tile News, New Delhi.
[11]. Barrow, C.J. (1991). Land Degradation, Development and Breakdown of Terrestrial Enviroments, Cambridge and New York.
[12]. Lodha, Rajmal &Maheshwari, Deepak (2009). Industrial Geography, Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur, pp.539.